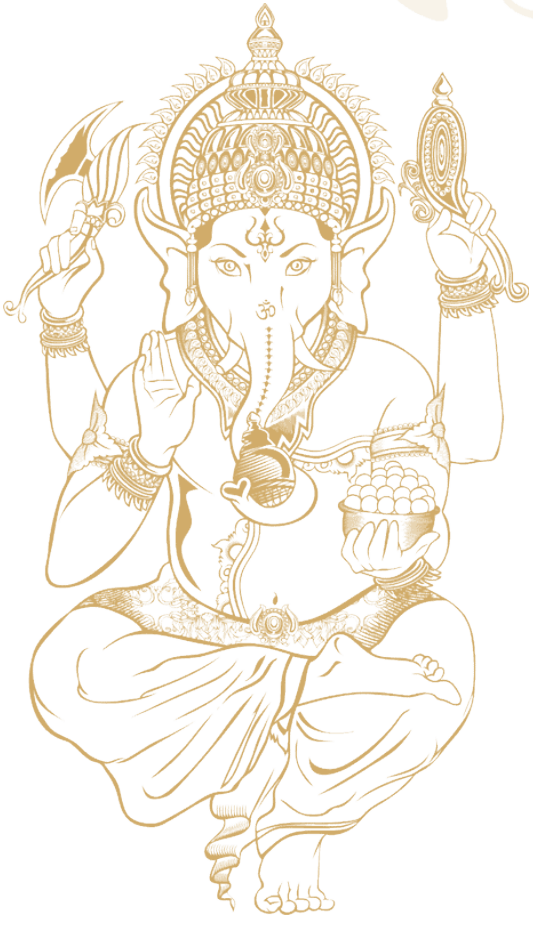

Anjali

14 Jul 1998

12:00 PM

Muzaffarpur

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120779301**

तिथि 14/07/1998 **समय** 12:00:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Muzaffarpur **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:50:05
अक्षांश 26:07:00 उत्तर **रेखांश** 85:23:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:11:32 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	07:39:15 घं
वेलान्तर	00:05:48 घं
सूर्योदय	05:05:12 घं
सूर्यास्त	18:43:03 घं
चैत्रादि संवत	2055
शक संवत	1920
मास	श्रावण
पक्ष	कृष्ण
तिथि	5
नक्षत्र	पू०भाद्रपद
योग	शोभन
करण	तैतिल

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	सिंह
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मेष
युँजा	अन्त्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	सो-सौम्या
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-लौह
होरा	गुरु
चौघड़िया	अमृत

विंशोत्तरी

गुरु 8वर्ष 0मा 16दि
बुध
30/07/2025
30/07/2042

बुध	26/12/2027
केतु	23/12/2028
शुक्र	24/10/2031
सूर्य	29/08/2032
चन्द्र	28/01/2034
मंगल	26/01/2035
राहु	14/08/2037
गुरु	20/11/2039
शनि	30/07/2042

योगिनी

भ्रामरी 2वर्ष 0मा 4दि
संकटा
18/07/2018
18/07/2026

संकटा	27/04/2020
मंगला	18/07/2020
पिंगला	27/12/2020
धान्या	27/08/2021
भ्रामरी	18/07/2022
भद्रिका	28/08/2023
उल्का	27/12/2024
सिद्धा	18/07/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			28:22:22	कन्या	चित्रा	2	मंगल	शनि	---	0:00			
सूर्य			27:47:52	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	शुक्र	सम राशि	1.92	अमात्य	पितृ	जन्म
चंद्र			26:37:48	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	शुक्र	सम राशि	1.13	भातृ	मातृ	जन्म
मंगल			11:29:06	मिथु	आर्द्रा	2	राहु	शनि	शत्रु राशि	1.30	पुत्र	भातृ	अतिमित्र
बुध			24:17:18	कर्क	आश्लेषा	3	बुध	राहु	शत्रु राशि	1.06	मातृ	ज्ञाति	विपत
गुरु			04:12:05	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	स्वराशि	1.52	कलत्र	धन	सम्पत
शुक्र			29:43:03	वृष	मृगशिरा	2	मंगल	शनि	स्वराशि	1.48	आत्मा	कलत्र	मित्र
शनि			08:53:30	मेष	अश्विनी	3	केतु	गुरु	नीच राशि	1.10	ज्ञाति	आयु	क्षेम
राहु			08:12:49	सिंह	मघा	3	केतु	गुरु	शत्रु राशि		---	ज्ञान	क्षेम
केतु			08:12:49	कुंभ	शतभिषा	1	राहु	राहु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	अतिमित्र

लग्न-चलित

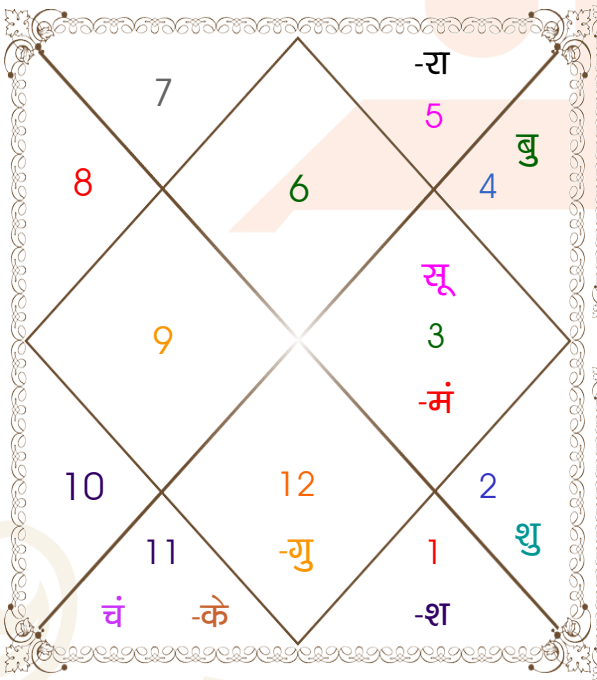

चन्द्र कुंडली

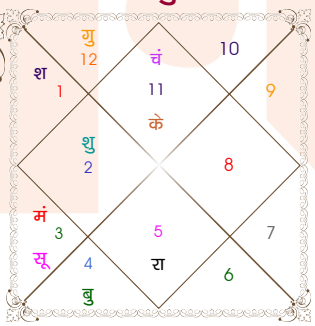

नवमांश कुंडली

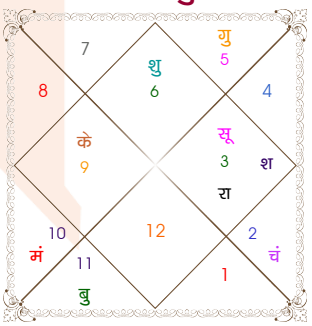

सर्वाष्टकवर्ग

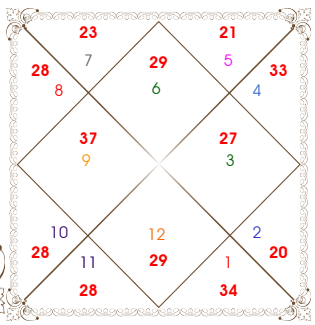

दशमांश कुंडली

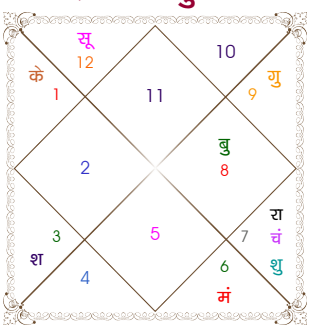

Shree Siddhivinayak Astro
Gola Bandh Road Muzaffarpur
9693608763
shreesiddhivinayakastro@gmail.com

नक्षत्रफल

आप पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि कुम्भ तथा राशिस्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी नाड़ी आद्य, वर्ण शूद्र, गण मनुष्य, वर्ग मेष तथा योनि सिंह होगी। नक्षत्र के द्वितीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "सो" या "सौ" से प्रारम्भ होगा।

आप एक संयमी महिला होंगी तथा इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण रख करके संयमशील जीवन व्यतीत करेंगी। आप नाना प्रकार की कलाओं तथा कार्यों की ज्ञाता रहेंगी एवं दक्षतापूर्वक इनको सम्पन्न करने में सफलता प्राप्त करेंगी। शत्रु पक्ष को पराजित तथा भयभीत करने में भी आप हमेशा सफल रहेंगी। आप तीक्ष्ण बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा अपने समस्त सांसारिक कार्यों को बुद्धिमता से पूर्ण करके सुख एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

जितेन्द्रियः सर्वकलासु दक्षो जितारिपक्षः खलु यस्य नित्यम्।
भवेन्मनीषा सुतरामपूर्वा पूर्वादिका भाद्रपदा प्रसूतौ।।
जातकाभरणम्

अर्थात् पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक जितेन्द्रिय, समस्त कलाओं में निपुण, शत्रुपक्ष को जीतने वाला तथा बुद्धिमान होता है।

कभी कभी आप वास्तविक रूप से मानसिक कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगी। आप अपने पति को पूर्ण रूपेण वश में करने में सफलता प्राप्त करेंगी तथा वे समस्त सांसारिक कार्यों को आपके कथनानुसार तथा निर्देशानुसार ही सम्पन्न करेंगे। इस विषय में स्वतंत्र निर्णय लेने में प्रायः असमर्थ रहेंगे। आप एक धनाढ्य महिला होंगी एवं विपुल धनैश्वर्य से सुसम्पन्न रहकर जीवन काल में सुखपूर्वक इसी का उपभोग करेंगी। आप को विविध शास्त्रों का भी ज्ञान रहेगा। अतः विदुषी के रूप में भी आप का सम्मान किया जाएगा। इसके साथ ही आप एक चतुर महिला भी होंगी परन्तु स्वभाव में कृपणता होने के कारण अधिकांश लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे।

भाद्रपदासूद्विग्नः स्त्रीजितधनी पटुरदाता च।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य हृदय से दुःखी, स्त्री के वश में रहने वाला, धनवान चतुर पीड़ित तथा कृपण स्वभाव का होता है।

आप सर्वदा ओजस्वी तथा साहस युक्त वाणी का प्रयोग करेंगी जिससे सभी सामाजिक लोग आपसे प्रभावित होंगे एवं आपको हार्दिक आदर भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आप स्वभाव से ही डरपोक रहेगी तथा अधिकांशतया इससे व्याकुल रहेंगी परन्तु समाज में सभी लोगों से आपके मधुर तथा स्नेहपूर्ण संबंध रहेंगे।

पूर्वप्रोष्ठपदि प्रगल्भवचनो धूर्तोभयार्तो मृदुः।।

अर्थात् पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में पैदा होने वाला पुरूष साहस एवं ओजस्वी वाणी बोलने वाला, धूर्त, भय से व्याकुलता प्राप्त करने वाला तथा मृदुस्वभाव का होता है।

भाषण देने की कला में आप दक्ष होगी तथा अपनी ओजस्वी भाषणों से सर्वसाधारण को अपनी ओर आकर्षित एवं प्रभावित करने में सफल रहेंगी। आप सुखसंसाधनों से भी युक्त रहेंगी एवं जीवन में सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आप विस्तृत परिवार से युक्त रहेंगी एवं समाज से यथायोग्य मान सम्मान तथा आदर भाव प्राप्त करती रहेंगी लेकिन आपको नींद अधिक आएगी फलतः आलस्य के प्रभाव में वृद्धि होगी। इसी प्रभाव वश कभी कभी आप बिल्कुल ही निष्क्रिय हो जाएंगी तथा किसी भी कार्य को नहीं करेंगी।

वक्ता सुखीप्रजायुक्तो बहुनिद्रोनिरर्थकः।
पूर्वभाद्रपदायां च जातो भवति मानवः।।
मानसागरी

अर्थात् पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक श्रेष्ठ वक्ता, सुखी, सम्मान वाला, अधिक नींद वाला तथा स्वयं किसी कार्य के योग्य नहीं होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ है। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते है। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा। अपितु अधिकांश शुभ ही रहेगा। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु भी अल्प मात्रा में ही रहेंगे वे सभी आपसे पराजित तथा प्रभावित रहेंगे। कभी कभी आप स्वाभाविक रूप से क्रोध या उग्रता का भी प्रदर्शन करेंगी। आप सुन्दर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा शरीर में लावण्यता पूर्ण रूपेण विद्य मान रहेगी। जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। इसके अतिरिक्त कभी कभी आप अल्प मात्रा में शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगी।

कुम्भ राशि में उत्पन्न होने के कारण आपकी नासिका उन्नत रहेगी तथा मुख एवं मस्तक भी विस्तृत आकार का होगा। साथ ही आपके हाथ, पैर एवं कटिभाग में भी स्थूलता रहेगी। आपके शरीर में रूक्षता रहेगी परन्तु कृत्रिम उपायों से इसका आपके सौन्दर्य पर कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं पड़ेगा। आप विद्रोही स्वभाव की भी होंगी तथा समय समय पर अपने श्रेष्ठजनों या अन्यों के समक्ष इसका प्रदर्शन भी करती रहेंगी। साथ ही आपमें स्वभाविक उग्रता भी विद्यमान रहेगी तथा समय समय पर क्रोध आदि उग्रभावों का भी प्रदर्शन करती रहेंगी। आप में धार्मिकता की भावना भी विद्यमानरहेगी। आप में आलस का भाव भी रहेगा जिससे कई कार्यों

में अनावश्यक विलम्ब होगा। शिल्प विद्या या चित्रकारी के प्रति आप विशेष रूचिशील रहेंगी एवं इस क्षेत्र में विशेष सफलता एवं ख्याति अर्जित करने में सक्षम रहेगी। इसके अतिरिक्त समय समय पर आप मानसिक कष्ट से भी व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगी।

उद्धोणो रूक्षदेहः पृथुकरचरणो मद्यपान प्रसक्तः।
सद्द्वेष्यो धर्महीनः परसुतजनकः स्थूलमूर्धाकुनेत्रः।।
शाठ्यालस्याभिभूतो विपुलमुखकटिः शिल्पविद्या समेते।
दुःशीलो दुःखतप्तो घटभमुपगते रात्रिनाथे दरिद्रः।।
सारावली

समाज में आप एक विदुषी के रूप में भी आदरणीया रहेंगी तथा कई प्रकार के शास्त्रों का आपको अच्छा ज्ञान रहेगा। इसके साथ ही विविध प्रकार के कार्यों को करने में भी आप निपुण रहेंगी। आप का स्वभाव भी शान्त होगा एवं उग्रता तथा हिंसक प्रवृतियां अल्प मात्रा में रहेंगी। साथ ही शत्रुवर्ग को पराजित करने एवं उनके प्रभाव को नष्ट करने में आप हमेशा सफल रहेंगी।

अलसता सहितोनयसुतप्रियः कुशलताकलितोळति विचक्षणः।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरूरिपुव्रजः।।
जातकाभरणम्

आप गुप्त रूप से कूर कर्मो को करने में प्रवृत रहेगी तथा अप्रत्यक्ष रूप से आपका इन कार्यों में सहयोग रहेगा। यात्रा तथा भ्रमण आदि में आप रूचिशील रहेंगी एवं अपना अधिकांश समय इस पर व्यतीत करेंगी। दूसरे के धन के प्रति भी आपके मन में लालच की भावना रहेगी तथा इसे प्राप्त करने के लिए आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगे। आप की आर्थिक स्थिति विषम रहेगी कभी तो अत्यल्प मात्रा में धनागम होगा तो कभी अत्यधिक मात्रा में। इसके अतिरिक्त सुगन्धित द्रव्यों सौन्दर्य प्रसाधनों तथा सुगन्धित पुष्पादि के प्रति भी आपके मन में आसक्ति रहेगी तथा अवसरानुकूल आप इनका उपयोग करती रहेंगी।

प्रच्छन्नपापो घटतुल्य देहो विघातदक्षोळध्वसहो डवित्तः।
लुब्धः परार्थी क्षयवृद्धि युक्तो घटोद्भवः स्यात्प्रियगन्धपुष्पः।।
फलदीपिका

आप में उच्च कोटि के विद्वानों के लक्षण रहेंगे तथा समाज में आप यश भी अर्जित करेंगे। लेकिन अन्य योग्य विद्वानों को आप यथोचित सत्कार प्रदान नहीं करेंगी अतः इससे आपकी सामाजिक सम्मान तथा आदर में अल्पता आएगी।

कुम्भस्थे गतशीलवान बुधजनद्वेषी च विद्याधिको।
जातक परिजातः

जीवन के हर क्षेत्र में आप सामान्यतया विजय तथा सफलता अर्जित करने में सक्षम रहेंगी। आपका चाल चलन उत्तम रहेगा तथा अन्य लोगों के लिए या अनुकरणनीय तथा

प्रशंसनीय होगा। धनैश्वर्य से आप प्रायः सुसम्पन्न ही रहेंगी। गुरूजनों तथा अन्य श्रेष्ठजनों के प्रति आपके मन में असीम श्रद्धा तथा निष्ठा का भाव रहेगा तथा समय समय पर उनकी सहायता एवं सहयोग करने के लिए उद्यत रहेंगी। पुरूष वर्ग में आप आदरणीया तथा लोकप्रिय होंगी तथा इनकी सेवा एवं सहयोग के लिए भी आप तत्पर रहेंगी। आपका परिवार विशाल होगा तथा जाति एवं वर्ग के इष्ट कार्य को सम्पन्न करने के लिए आप हमेशा रूचिशील रहेंगी तथा अपने परिश्रम एवं बुद्धि से ऐसे कार्यों को सम्पन्न करती रहेंगी। अतः जाति या वर्ग में आप विशिष्ट श्रद्धेया तथा अत्यन्त ही आदरणीया समझी जाएंगी। इसके अतिरिक्त आप नाना प्रकार के सद्गुणों से युक्त रहेगी तथा जीवन में इनका अनुपालन करके सुखपूर्वक जीवन यापन करेंगी।

भुवनविजययुक्तः सुन्दरः सच्चरित्रः।
स्थिरधन गुरूभक्तो मानिनी चित्तरक्तः।।
बहुजनपरिवारो ज्ञातिवर्गेष्ट कर्ता।
सकलगुणसमेतः कुम्भराशि र्मनुष्यः।।
जातक दीपिका

आपके गर्दन की लम्बाई सामान्य से अधिक होगी एवं शारीरिक नसे भी बाहर स्पष्ट रूप से दिखाई देंगी तथा आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। वात जनित रोगों से आप यदा कदा व्याकुलता प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त मित्रों के प्रति आपके मन में विशेष स्नेह एवं प्रेम का भाव रहेगा तथा हमेशा यथाशक्ति उनको सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगी।

करभगलः शिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः।
पृथुचरणोरूपृष्ठ जघनास्य कटिर्जरठः।।
परवनितार्थ पापनिरतः क्षयवृद्धियुतः।
प्रियकुसुमानुलेपन सुहृदघटजो ळध्वसहः।।
वृहज्जातकम्

आप में दानशीलता का भाव प्रारम्भ से ही विद्यमान रहेगा अतः जीवन में यथाशक्ति अवसरानुकूल आप अपनी इस प्रवृति का अनुपालन करती रहेंगी तथा समाज में ख्याति एवं सम्मान अर्जित करेंगी। आप में कृतज्ञता का गुण भी रहेगा तथा अन्य लोगों से उपकृत होने पर उनका उपकार स्वीकार करना तथा उनके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करना आप अपना परमप्रिय कर्तव्य समझेंगी। आपकी आँखें अत्यन्त ही सुन्दर होंगी एवं बुद्धि में भी सरलता का भाव विद्य मान रहेगा अतः अन्य जनों से आप में धोखा या प्रपंचादि प्रवृति का सर्वथा अभाव रहेगा। जीवन में नाना प्रकार के वाहन साधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी इस प्रकार अपने स्नेह शील स्वभाव तथा मधुर व्यवहार के कारण आप समाज में सम्मानित रहेगी एवं सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

दातालसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनैश्वरः।
शुभदृष्टिः सदासौम्यो धनविद्याकृतोद्यमः।।
पुण्याढ्यः स्नेहकीर्तिश्च धनभोगी स्वशक्तः।

शालूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

मनुष्य गण में जन्म होने के कारण आप की देवता एवं ब्राहमणों के प्रति अत्यन्त ही श्रद्धा रहेगी एवं अवसरानुकूल आप इनकी पूजा तथा सेवा करने में सर्वदा तत्पर रहेंगी। परन्तु आप में अभिमान की भावना भी रहेगी एवं समय समय पर अन्य सामाजिक जनों के समक्ष इसका प्रदर्शन करेंगी। इससे लोग आपसे अप्रसन्न भी रहेंगे। आप के मन में दया का भाव भी रहेगा एवं दीन दुःखियों के प्रति आपके मन में विशेष करूणा रहेगी। आपमें शारीरिक बलपूर्ण रूप से विद्यमान रहेगा तथा आपके अधिकांश कार्य स्वभुजबल से ही सम्पन्न होंगे। कई प्रकार की कलाओं को आप जानने वाली होंगी तथा एक विदुषी के रूप में भी समाज में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगी। आपकी शारीरिक कान्ति दर्शनीय होगी। इसके अतिरिक्त अपने परिवार के अतिरिक्त अन्य कई लोगों को सुख प्रदान करने में भी समर्थ रहेंगी।

समाज में चारों तरफ आपका मान सम्मान रहेगा तथा धन सम्पत्ति से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी। आपकी आँखें बड़ी बड़ी होंगी तथा निशाने बाजी में आप प्रवीणता को प्राप्त करेंगी एवं इस क्षेत्र में विशेष सफलता तथा ख्याति भी अर्जित कर सकेंगी। आप गौरवर्ण की सुन्दर महिला होंगी तथा नगर वासियों पर आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा अतः आप एक प्रतिष्ठित तथा नगर की सम्माननीया महिला होंगी।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

सिंह योनि में उत्पन्न होने के कारण आप में धार्मिकता की भावना की पूर्ण प्रधानता रहेगी तथा अधिकांश धार्मिक क्रियाओं का आप श्रद्धा पूर्वक अनुपालन करेंगी। आप हमेशा अच्छे कार्यों को करने में प्रवृत रहेंगी तथा यत्नपूर्वक सत्कार्यों को ही करेंगी जिससे अन्य लोग भी लाभान्वित होंगे तथा आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। साथ ही आप एक गुणवती महिला भी होगी एवं विभिन्न प्रकार के सद्गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी। इसके साथ ही परिवार की समृद्धि तथा उन्नति प्रदान करने में आपका अत्याधिक सहयोग रहेगा स्वपरिवार में आप सर्वदा आदरणीया रहेंगी।

स्वधर्मे तु सदाचारसत्क्रियासद्गुणान्वितः।
कुटुम्बस्य समुद्धर्ता सिंहयोनिभवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् सिंहयोनि में उत्पन्न जातक अपने धर्म में सच्चा आचार-व्यवहार वाला,

अच्छी किया एवं अच्छे गुणों से सम्पन्न और परिवार का उद्धार करता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठभाव में स्थित है। अतः आप माता की प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से वे दुर्बलता की अनुभूति करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको पूर्ण रूप से हर सम्भव सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। इसके साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में यदि कोई व्यवधान आएंगे तो उन्हें दूर करने में सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगी तथा आपकी सफलता की सर्वदा इच्छुक होंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रखेंगी तथा हमेशा उनकी सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगी परन्तु आपके मध्य कभी कभी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे अप्रिय स्थितियां भी उत्पन्न होंगी लेकिन फिर भी सामान्य संबंध मधुर ही रहेंगे। साथ ही उनको जीवन में वांछित सहायता एवं सहयोग प्रदान करने की भी आप इच्छुक रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा उनमें शारीरिक दुर्बलता भी परिलक्षित होगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपके साथ रहेंगे। तथा नौकरी या व्यापारादि में आपका सहयोग करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। लेकिन कभी कभी आपसी मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अल्प समय तक रहेगी। साथ ही आप उनकी आजीविका संबंधी कार्यों में में यथाशक्ति आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करती रहेंगी।

आपके लिए चैत्र मास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, आर्द्रा नक्षत्र, गण्डयोग, वणिजकरण, गुरूवार, तृतीय प्रहर एवं मिथुन राशिस्थ चन्द्रमा सदैव अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 मार्च से 14 अप्रैल के मध्य 3,8,13 तिथियों, आर्द्रा नक्षत्र, गण्डयोग तथा वणिजकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ एवं

महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा मिथुन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी विशेष सावधानी रखनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक चिन्ता, शरीर में व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान उत्पन्न हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट कुबेर की आराधना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से शनिवार के उपवास भी रखने चाहिए। इसके साथ ही सोना, नीलम, पंचधातु, लोहा, तिल, तेल, कम्बल आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी मानसिक चिन्ताएं खत्म होगी तथा शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा एवं अशुभ फलों का प्रभाव नष्ट होकर अन्यत्र शुभ फलों की प्राप्ति होगी। साथ ही सर्वत्र लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।